



नवम्बर: 2020

वर्ष : 4 अंक : 2

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



संस्थान का नवम्बर 2020 मासिक समाचार, आप सभी को दीपावली और गुरु नानक जयंती की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ प्रस्तुत है।

दीपावली दीपों का पर्व है। यह त्योहार हमें यह संदेश देता है कि जिस प्रकार दीपों की लड़ी घने अंधकार को खत्म करती है उसी प्रकार हम अपने जीवन संघर्ष को विवेक और ज्ञानरूपी प्रकाश से गौरवान्वित कर सकते हैं। शरद काल और कार्तिक मास में मनाई जाने वाली त्योहारों में दीपावली और गुरु पूर्णिमा का विशेष महत्व है। गुरु पूर्णिमा अर्थात् सिक्खों के प्रथम गुरु, नानक देव जी का जन्म दिवस।

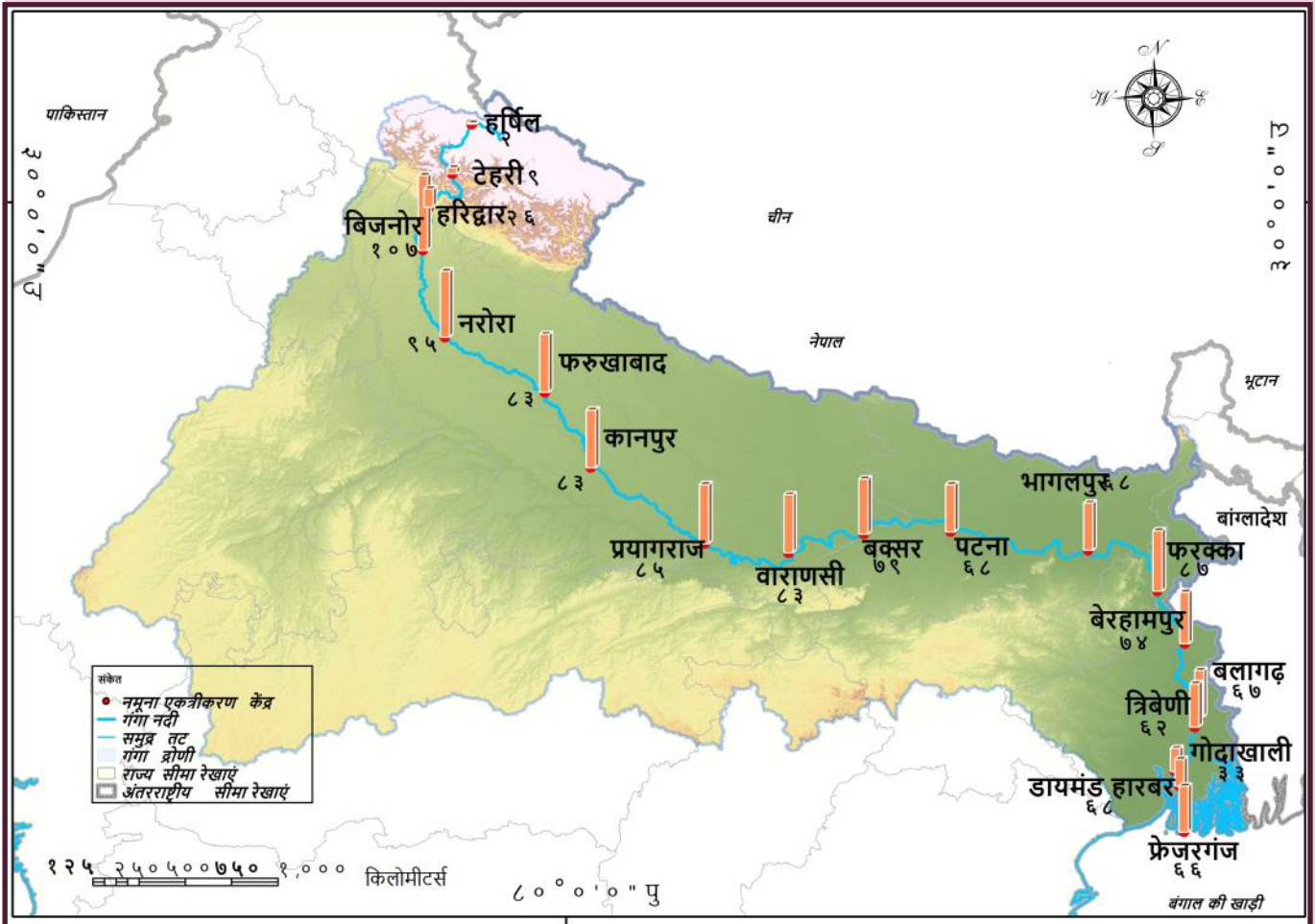
प्रस्तुत अंक में संस्थान में हुये अक्टूबर माह के कार्यकलापों में संस्थान की वेबसाइट पर सार्वजनिक उपयोग के लिए भारत के 18 राज्यों के अंतर्स्थलीय जल संसाधनों पर ई-एटलस ने उपलब्ध कराना है। महात्मा गांधी की 150वीं जयंती समारोह के अंतर्गत सप्ताह भर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जैसे कि झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले लोगों को मास्क और सैनिटाइजर का वितरण करना और गंगा घाट की सफाई और ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव तथा स्वच्छता के लिए जन-जागरूक कार्यक्रम आदि। संस्थान में कई और आयोजन जैसे विश्व डॉल्फिन दिवस का आयोजन, अम्फान प्रभावित क्षेत्र (जैसे सुंदरवन) में मछुआरों को सहायता प्रदान करना तथा महिला मछुआरों के स्वरोजगार हेतु अलंकारी मछली पालन पर प्रशिक्षण आदि का विशेष महत्व रहा है।

मैं आप सभी को दीपावली और गुरु नानक जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई देता हूँ और आपके उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। धन्यवाद,

(बसन्त कुमार दास)

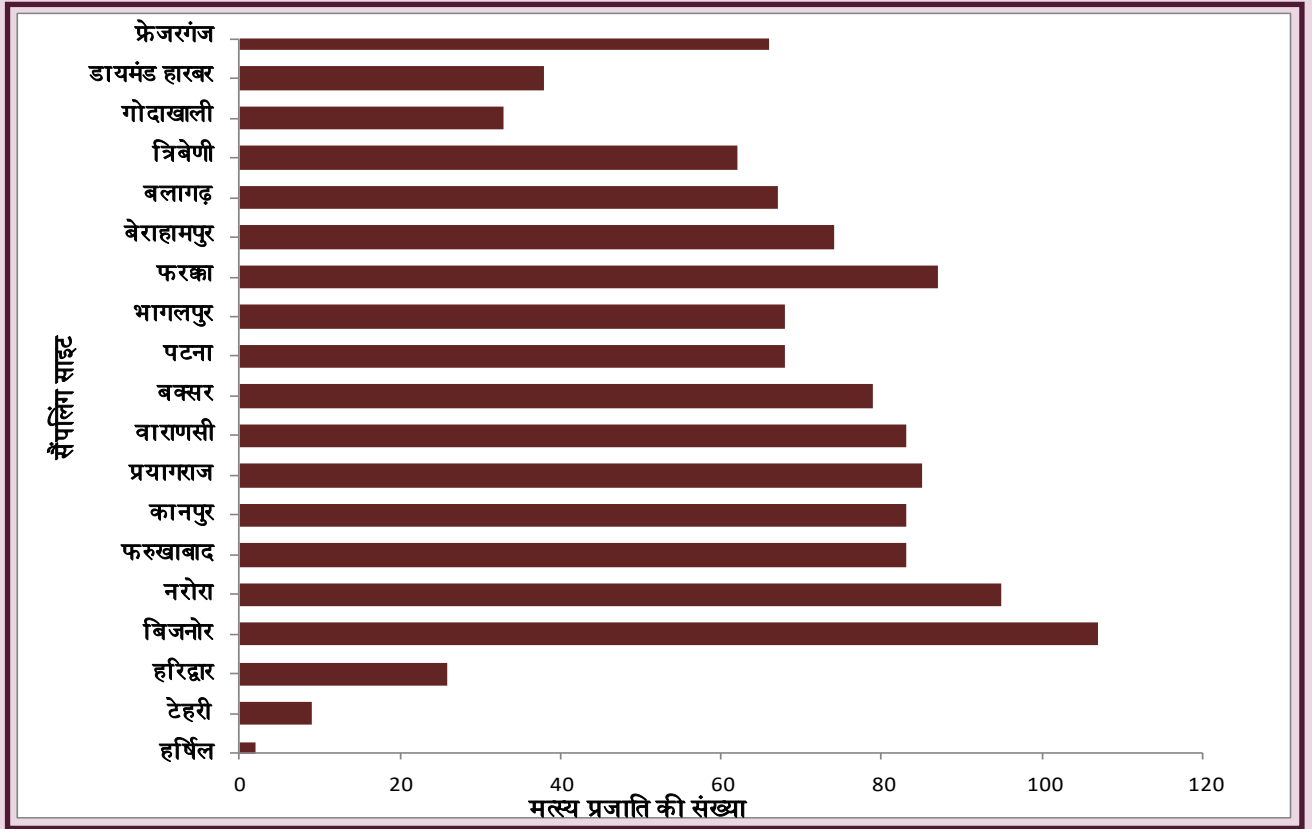
गंगा नदी की मत्स्य विविधता

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता ने गंगा नदी के मुख्य चैनल, हरसिल से फ्रेजरगंज के बीच 'नमामि गंगे' परियोजना के तहत विभिन्न फैमिली और जेनेरा की 190 मछली प्रजातियों (182 स्वदेशी और 8 विदेशी) को दर्ज किया। इन मछलियों में सबसे अधिक साइप्रिनिडी वर्ग की कार्प प्रजातियों को देखा गया जिनका व्यावसायिक तौर पर विशेष महत्व है। कुल पकड़ी गयी मछलियों में साइप्रिनिडोर्मे की प्रचुरता अधिक देखी गयी (20 प्रतिशत)। इसके बाद सिल्यूरिफोर्मे (22 प्रतिशत) जिसका कुल मछली प्रजातियों में 29 प्रतिशत का योगदान है, को दर्ज किया गया। वर्तमान अध्ययन से पता चला है कि गंगा नदी में खाद्य मछली (60.84 प्रतिशत), अलंकारी मछली (35.44 प्रतिशत) और आखेट मछली (3.70 प्रतिशत) पायी जाती हैं।



आईयूसीएन की रेड लिस्ट 2020 के अनुसार कुछ स्वदेशी प्रजातियों का अस्तित्व खतरे की श्रेणी में रखा गया है। इनमें से 10 प्रतिशत (15 प्रजातियाँ विलुप्तप्राय, 2 प्रजातियों का अस्तित्व खतरे में और 2 प्रजातियाँ संकटग्रस्त) प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। दर्ज की गई प्रजातियों में से लगभग 73.68 प्रतिशत संकट की स्थिति में नहीं हैं, जिसका उपयोग विस्तृत मूल्यांकन के बाद मानव उपभोग के लिए किया जा सकता है। संकटग्रस्त प्रजातियों के आधार पर गंगा नदी में अतिरिक्त मत्स्य प्रजातियों का विकास करने की आवश्यकता है क्योंकि स्वदेशी प्रजातियों में से 12.10 प्रतिशत मछलियों के संकट में होने का मूल्यांकन अभी तक नहीं किया जा सका है। गंगा नदी में विभिन्न जल परितंत्रों में वास करने वाली मत्स्य प्रजातियाँ भी पायी जाती है।

अध्ययन के अनुसार गंगा नदी में पाई जाने वाली मत्स्य प्रजातियों में से 55.78 प्रतिशत प्रजातियों को मीठा जल प्रजाति के रूप में वर्गीकृत किया है। नदी की लगभग 15.26 प्रतिशत मछलियाँ (17 फैमिली और 26 जेनेरा) अलवणीय जल, लवणीय जल और समुद्री जल क्षेत्रों की हैं। इसके बाद, केवल 18.94 प्रतिशत मछलियाँ (24 फैमिली और 34 जेनेरा) संपूर्ण तौर पर लवणीय जल और समुद्री जल क्षेत्रों की है। सभी वर्गों में से, 10 प्रतिशत प्रजातियाँ (14 फैमिली और 15 जेनेरा) अलवणीय जल और लवणीय जल से मिश्रित तौर पर दर्ज की गई। अलवणीय जल प्रजातियों में 8 अलग-अलग विदेशी मत्स्य प्रजातियाँ (टेनोफेरींगोडोन आइडेला, हाइपोथाल्मिकथिस मोलिट्रिक्स, हाइपोथाल्मिकथिस नोबिलिस, साइप्रिनस कार्पियो वैरिएम, कम्पुनिस, साइप्रिनस कार्पियो वार.



स्पेकुलेरिस, ओरियोक्रोमिस नाइलोटिकस, क्लैरैसस गार्सिनपीन और टेरींगोलिक्थिस डिस्जक्तिवास) कुल दर्ज की गयी प्रजातियों का 3.74 प्रतिशत पायी गई।

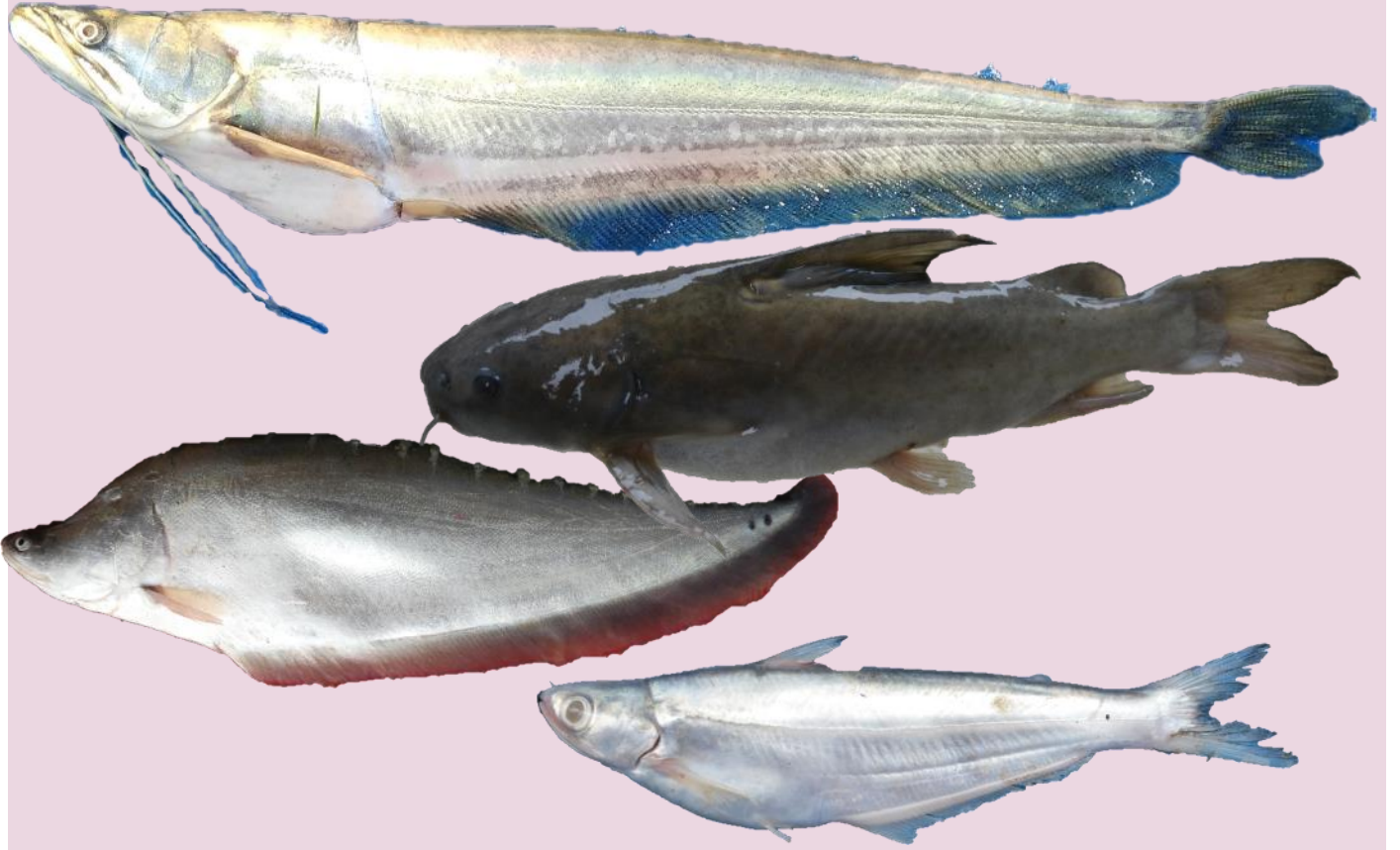


वर्तमान अध्ययन में, बिजनौर और नरौरा में सबसे अधिक प्रजातियां (क्रमशः 107% और 95%) दर्ज की गईं। इसके बाद फरक्का, प्रयागराज (इलाहाबाद), कानपुर और अन्य स्थानों से दर्ज किया गया। डायमंड हार्बर और गोदाखली में सबसे कम संख्या में मत्स्य प्रजातियां दर्ज की गयी हैं (क्रमशः 38% और 33%)। हरिद्वार, बिजनौर और नरौरा के ऊपरी क्षेत्रों में कैटफिश और विविध समूहों की तुलना में कार्प प्रजातियाँ क्रमशः 54 प्रतिशत, 24 प्रतिशत और 23 प्रतिशत पायी गईं। हालांकि, नदी के मध्य और नीचे भाग में कार्प प्रजातियों की संख्या में एक बड़ी गिरावट देखने को मिली पर विविध मछली समूहों में काफी वृद्धि देखी गई। वाराणसी, पटना, भागलपुर, बालागढ़ और त्रिबनी केन्द्रों में मेजर कार्प की उपलब्धता में तेज गिरावट (क्रमशः 27, 31, 23, 52 और 58 प्रतिशत) देखने को मिली जबकि विविध मछली समूहों का प्रतिशत क्रमशः 22 से 15 देखा गया। इस प्रकार, कार्प प्रजातियों (प्रमुख, मध्यम और मध्यम) का कम संख्या में उपलब्ध होना एक चिंता का विषय बन गया है साथ ही कार्प मछलियों की पकड़ केवल 2.3 प्रतिशत ही पायी गयी। विविध या ट्रेश मछली समूह (43 प्रतिशत) अधिक मात्र में पायी गयी। हर्षिल से हरिद्वार के बीच पहाड़ी मत्स्य प्रजातियों की अधिकता थी। इनमें से प्रमुख प्रजातियां बार्ब, बारिल और मिनोस हैं। पहाड़ी क्षेत्र में प्रमुख प्रजातियाँ - महासीर (टोर पुटिटोरा) और स्रोटाउट (स्किज़ोथोरैक्स रिचर्डसोनी) थी।



हरिद्वार से नीचे भागलपुर तक के मैदानी इलाकों में कार्प और कैटफिश जैसी व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण मत्स्य समूहों की उपस्थिति दिखाई पड़ती है। आर्थिक तौर पर उच्च मूल्य वाली प्रजातियाँ हैं - लेबियो रोहिता, एल. कैटला, सिरहिनस मुगला, एल. कैलबसु, स्पेराता एओर, एस. सिंधाला, वलागो अट्टू, चीतल चीतल, रीता रीता, यूट्रोपिकथिस वाचा और क्लूपिसोमा गारुआ। वर्षों से, कानपुर से वाराणसी के बीच के नदीय क्षेत्र में प्रदूषण की अधिकता पायी गयी है।





हालांकि, वर्तमान अध्ययन में 76 मछली प्रजातियों का पता चला है जो हाल के कुछ अध्ययनों की रिपोर्ट की तुलना में थोड़ा अधिक है। वाराणसी (उत्तर प्रदेश) के निचले गंगा क्षेत्र से लेकर नदी के त्रिबेनी (पश्चिम बंगाल) तक जैव विविधता संरक्षण के दृष्टिकोण से समृद्ध है। यह क्षेत्र दो विदेशी मछलियों- साइप्रिनस कार्पियो और ओरियोक्रोमिस निलोटिकस के साथ 101 देशी मछलियों की उपलब्धता को बताता है तथा जल गुणवत्ता हास को भी दर्शाता है। मछली प्रजातियों के वितरण पर यह खोज बिहार के भागलपुर के पास विक्रमशिला गंगा नदी डॉल्फिन अभयारण्य में स्थित नदी के संरक्षित क्षेत्र में भारत के लुप्तप्राय राष्ट्रीय जलीय जीव (प्लैटनिस्टा गैंगेटिका गैंगेटिका) की उपस्थिति को भी बताता है। पश्चिम बंगाल में गंगा नदी के फरक्का बैराज के निचले हिस्से में मछली की उच्चतम विविधता (86) पर प्रलेख तैयार किया गया है।

इसके अलावा, नदी जैसे ही कोलकाता और त्रिबेनी से होती हुई लगभग 30 किलोमीटर नीचे स्थित गोदाखाली तक पहुंचती है, वहाँ के जल में प्रदूषण का स्तर अधिक होने के कारण मत्स्य प्रजातियों की संख्या घटने लगती है। गोदाखली और डायमंड हार्बर के ज्वारनदमुख भाग में लवणीय जल प्रजातियाँ जैसे टेन्यूलोसा इलिशा, पॉलीनेमस पैराडाइसस, एरियस सपा, ओटोलिथोइड्स पामा, ओडोन्टोमब्योपेलस विडीकुंडस और सेटपिनना प्रजाति की प्रचुरता अधिक देखी गयी है।



आम्फन से पीड़ित सागर द्वीप, पश्चिम बंगाल के अनुसूचित जाति के मछुआरों के सतत मत्स्य विकास के लिए सहायता प्रदान किया गया



अन्य द्वीपों की तरह, सागर द्वीप भी चक्रवात, बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण अत्यधिक असुरक्षित है। आम्फन चक्रवात के कारण सागर द्वीप में गंभीर क्षति हुई। आम्फन चक्रवात ने द्वीप में लोगों के घर, आजीविका के साधन और अन्य बुनियादी सुविधाओं को नष्ट कर दिया। आम्फन के दौरान तालाबों और कृषि भूमि में खारे पानी के प्रवेश के कारण मत्स्य पालन और कृषि फसलों का भारी

नुकसान हुआ था। इस द्वीप में रहने वाले अधिकतर लोग आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं। संस्थान ने इस संकट से उबरने और सागर द्वीप के प्रभावित समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को मजबूत करने का प्रयास किया है। अतः संस्थान ने निदेशक, डॉ. बि. के. दास के नेतृत्व में दिनांक 20 अक्टूबर 2020 को पश्चिम बंगाल के सागर द्वीप के 250 अनुसूचित जाति के मछुआरों को 9,000 किलोग्राम मछली फीड,





5,000 किलोग्राम चूना और 800 किलोग्राम मछली बीज वितरित किया। इस अवसर पर सागर द्वीप के एक स्थानीय गैर-सरकारी संगठन, एसकेएसवीवाईसीएस (SKSVYCS) के साथ और चार ग्रामीण पंचायतों के 250 अनुसूचित जाति के परिवारों का चयन किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक के साथ स्थानीय सरपंच और राज्य मत्स्य विभाग के मत्स्य अधिकारी उपस्थित थे। निदेशक महोदय ने मछुआरों को वैज्ञानिक तरीके से मछली पालन करने की सलाह दी और उन्हें एकीकृत खेती प्रणाली के लिए भी प्रेरित किया, जो जन्तु प्रोटीन के साथ स्थायी आजीविका भी प्रदान करेगा। इन मछुआरों को उनके बगीचे के लिए आम के पौधे भी प्रदान किए गए। साथ ही डॉल्फिन जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया और गंगासागर के मछुआरों को डॉल्फिन संरक्षण और जैव विविधता के महत्व को समझाया गया। इस कार्यक्रम का समन्वय डॉ. पी. परिदा, वैज्ञानिक ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित अन्य संस्थान कर्मियों में डॉ. संजय भौमिक, मुख्य तकनीकी अधिकारी, श्री सुजीत चौधरी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी; श्री मानबेंद्र राँय, तकनीकी सहायक; सुश्री मनीषा भोर, वाईपी-II और सुश्री श्रेया राँय, वाईपी-II शामिल थे।



बेजेरा, कामरूप, असम के बामुनी बील, में आदिवासी मछुआरों के आजीविका सुधार के लिए मत्स्य स्टॉक बढ़ाने का कार्यक्रम



बामुनी बील ब्रह्मपुत्र घाटी (उत्तरी तट) में स्थित एक खुला बाढ़कृत आर्द्रक्षेत्र है, जिसमें वर्ष के कुछ महीनों में ही जल रहता है। यह बील छोटी नदी मदन कुरी से जुड़ी है जो पुथिमरी नदी (ब्रह्मपुत्र की एक उत्तर- तटवर्ती सहायक नदी) से मिलती है। इसका आकार अंडाकार है जिसकी जल धारण क्षमता 16 हेक्टेयर है। इस जलक्षेत्र की गहराई 1.5-2.5 मीटर है, जो मानसून में 2.5-3.7 मीटर तक बढ़ जाती है। बामुनी गांव के कुल 65 बोडो आदिवासी परिवार अपनी पोषण और आजीविका की जरूरतों को पूरा करने के लिए इस बील पर निर्भरशील हैं। वर्ष 2006-07 से पहले, इस बील को सालाना लगभग रु.15,000-20,000 /- में पट्टे पर दिया जाता था और प्रग्रहण मात्स्यिकी द्वारा मछलियों को पकड़ा जाता था। इस बील को एआरआईएस (ARIAS) सोसायटी, असम सरकार द्वारा विकसित किया गया था। वर्ल्ड बैंक द्वारा वित्त पोषित एआरआईएस (ARIAS) परियोजना के तहत 2006-07 के दौरान असम सरकार के उद्योग से बील में मछली उत्पादन को बढ़ाने के लिए पूरक स्टॉकिंग की सुविधा के लिए चारों ओर एक परिधि बांध का निर्माण किया गया था। वर्ष 2011-12 के दौरान एआरआईएस (ARIAS) सोसायटी, असम सरकार की एएसीपी (AACP) परियोजना के तहत बांध को और मजबूत किया गया। बामुनि गाँव के स्थानीय आदिवासी समुदाय ने वर्ष 2006-07 के दौरान बील के मत्स्य प्रबंधन के लिए बामुनिगाँव बील विकास समिति (बीबीडीसी) का गठन किया। इस बील पर निर्भरशील मछुआरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, इसलिए बीबीडीसी केवल छिटपुट रूप से बील में मत्स्य बीजों का संचयन कर रहा है। पिछले वर्ष वित्त की कमी के कारण कोई संचयन नहीं किया गया था। इसी कारण बील की वर्तमान अनुमानित मछली उत्पादन कम रहा है (लगभग 390 किलोग्राम / हेक्टेयर / वर्ष) और वार्षिक आय (@ 15,000 रुपये प्रति परिवार) भी कम है।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास और डॉ. जे. के. जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के मार्गदर्शन में उत्तर-पूर्वी घटक के तहत संस्थान ने भारतीय मुख्य कार्य प्रजातियाँ, लबियो बाटा, ग्रास कार्प और सिल्वर बार्ब सहित 48,000 मछली अंगुलिमीन (3,000 अंगुलिमीन प्रति हेक्टेयर) की

दर से संचयित किया। इस अवसर पर, पूरक मत्स्य बीज संचयन कार्यक्रम के साथ एक जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम के समन्वयक संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास और नोडल अधिकारी, संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रभागाध्यक्ष, डॉ. बी.के. भट्टाचार्य थे। इसका संचालन केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. पी. दास, श्री ए. के. यादव और श्री एस. बोराह ने किया था। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मछुआरों के बीच जागरूकता पैदा करना था, ताकि मछली पालन करने वाले आदिवासी परिवारों (65 परिवार) की आजीविका में सुधार हो सके। क्षेत्रीय केंद्र के वैज्ञानिक, डॉ. प्रोनोब दास ने स्टॉकिंग कार्यक्रम की पृष्ठभूमि और उद्देश्यों के बारे में बताया। उन्होंने यह भी बताया कि बड़ी आकार की मछली उत्पादन के लिए सिफरी एचडीपीई (CIFRI-HDPE), नेट पेन और सिफरी केजग्रो (CIFRI-CAGEGROW) फ्लोटिंग फीड का उपयोग कर पेन कल्चर भी जल्द ही संस्थान द्वारा शुरू किया जाएगा। श्री सिमांकु बोरा ने बील मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं को इसके स्थायी उपयोग के लिए समझाया। श्री अनिल कुमार यादव ने बील के लिए विकसित सिफरी प्रौद्योगिकियों के आर्थिक लाभों पर चर्चा की। बीबीडीसी के सचिव, श्री बोलिन बोरो ने समिति द्वारा की गई वर्तमान मत्स्य गतिविधियों के बारे में बताया। उन्होंने कार्यक्रम के सफल कार्यान्वयन के लिए स्थानीय समुदाय के सदस्यों से संस्थान को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। बीबीडीसी के अध्यक्ष श्री मोहन स्वरागी ने स्टॉकिंग कार्यक्रम शुरू करने के लिए संस्थान के प्रति आभार व्यक्त किया जो निश्चित रूप से जनजातीय समुदाय की आय और आजीविका को बढ़ाएगा।

हिमाचल प्रदेश के पोंग जलाशय, कांगड़ा में संस्थान के टीम द्वारा सर्वेक्षण

दिनांक 14-20 अक्टूबर 2020 के दौरान जीआईजेड (GIZ) प्रायोजित परियोजना के तहत पोंग जलाशय, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश



के मछुआरों की आजीविका के लिए पारिस्थितिकी, मत्स्य पालन, वन्य जीवन के विभिन्न पहलुओं पर संस्थान के टीम द्वारा एक 'अनुसंधानात्मक सर्वेक्षण' किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने इस अन्वेषण के फ्रेम वर्क को डिजाइन करते हुए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन जल निकायों का एक विस्तृत अध्ययन किया गया, जिसमें प्राथमिक उत्पादन का मूल्यांकन, जलाशय के भौतिक-रासायनिक प्राचलों की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन, जैविक जीव, मछली पकड़ संबंधित आंकड़ें, एफसीएस द्वारा संचालित विभिन्न लैंडिंग केंद्रों के साथ सामंजस्य स्थापित करना, जल निकाय पर निर्भरशील प्रवासी और स्थानीय पक्षियों और वन्यजीवों पर आंकड़ा संग्रह करना, शामिल था। संस्थान की टीम ने पोंग जिला मत्स्य और संबद्ध अधिकारियों के साथ मछली पकड़ने पर राजस्व उत्पादन, मछुआरों के सामाजिक-आर्थिक जीवन स्तर, उनके घरेलू आय और आय के अन्य साधनों पर बातचीत



की। इस सर्वेक्षण के दौरान बहुत बड़े आकार की लेबियो कतला, 24-27 किग्रा, लेबियो रोहिता, 3.5-9.5 किग्रा, टोर पुटिटोरा, 3.0-10.5 किग्रा, स्पेस्टा सिचाला, 2.5-4.5 किग्रा की मछलियाँ पकड़ी गईं। ऐसी मछलियों का पकड़ा जाना कोविड 19 के दौरान हुये लॉकडाउन के कारण पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन पर सकारात्मक प्रभाव को दर्शाती है। इस दल का नेतृत्व डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभारी, प्रशिक्षण और विस्तार कक्ष ने किया। उनके साथ दो तकनीकी अधिकारियों और एक वाईपी -II भी थे। संस्थान की एक दल ने हिमाचल प्रदेश के मत्स्य निदेशक के साथ निदेशालय कार्यालय, बिलासपुर में एक औपचारिक बैठक भी की, जिसका उद्देश्य जलाशय की वर्तमान स्थिति का अध्ययन और मत्स्य पालन वृद्धि पर विचार विमर्श करना था। इस परियोजना से पोंग जलाशय में मत्स्य पालन वृद्धि के साथ ही इसपर निर्भरशील मछुआरों की आजीविका में भी सहायक सिद्ध होंगी।



संस्थान ने ओडिशा के भद्रक में अलंकारी मछली इकाई की स्थापना की - ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार का साधन



संस्थान ने अनुसूचित जाति उपयोजना कार्यक्रम के तहत भद्रक, ओडिशा के विभिन्न गांवों की अनुसूचित जाति की महिलाओं के लिए रामकृष्ण सेवाश्रम, भद्रक, ओडिशा में एक अलंकारी मछली इकाई की स्थापना की गई है। कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य अनुसूचित जाति की महिलाओं को आर्थिक तौर पर सशक्त बनाना और उन्हें आय के वैकल्पिक स्रोत प्रदान करके स्वरोजगार प्रदान करना था। दिनांक 24 अक्टूबर 2020 को संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास और रामकृष्ण सेवाश्रम, भद्रक के केंद्र प्रमुख स्वामी आशारानंद जी द्वारा अलंकारी मछली इकाई का उद्घाटन किया गया। डॉ. बि. के. दास ने अपने संबोधन में सजावटी मछली के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि कैसे ग्रामीण महिलाओं को इससे वैकल्पिक आय प्राप्त हो सकती है।

इस इकाई की स्थापना से पहले अलंकारी मछली पालन पर एक 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को रामकृष्ण सेवाश्रम, भद्रक में दिनांक 18 से 24 अक्टूबर 2020 तक आयोजित किया गया था। पहले चरण में, संस्थान ने अलंकारी मछली पालन के लिए उपयुक्त, पौधे, दवाइयां, हीटर, एयर ब्लोअर और पाइप के साथ 350 लीटर क्षमता के 25 एफ़आरपी टैंक प्रदान किए। यह कार्यक्रम संस्थान, रोटरी क्लब- भुवनेश्वर रॉयल, ओडिशा और रामकृष्ण सेवाश्रम, भद्रक द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था।



सिफरी एक अनंत सफर

सिफरी एक अनंत सफर है, जिसका इतिहास अनूठा है

कड़ी परिश्रम की डगर चल, आज इस मंजिल पर उठा है

सिफरी सागर की गहराई है, पर्वत की ऊंचाई है

सिफरी विख्यात की बादल, पूरे विश्व में छाई है

भारत में प्रथम फिश रिसर्च का, सूरज यही प्रकाश दिया

73 वर्षों से मात्स्यकी पर, नया-नया अभ्यास दिया

सन 1947 में, एक केंद्र के रूप में नीव पड़ी

1959 इस बैरकपुर में, मुख्यालय का जीव पड़ी

उन महान वैज्ञानिक जन का, बहा यह खून पसीना है

सच कहा जाय तो फिश रिसर्च का यह सिफरी ही मक्का मदीना है

चाँद सितारों को जैसे सुसज्जित करती रजनी है

नया संस्थान जो जन्म लिया, यह सिफरी ही उनकी जननी है

इस संस्थान में तकनीकी का अनुभव अति ही भीषण है

मात्स्य कृषक दूर-दूर से लेने आते प्रशिक्षण है

सिफरी के सुंदर कार्य सिंधु में, प्रगतियों का तरंग बना

सन 1967 में यह, आई. सी. ए. आर का अंग बना

सिफरी आई.सी.ए.आर का रिस्ता, 54 वर्षों का अट्टा है

सिफरी एक अनंत सफर है, जिसका इतिहास अनूठा है

आई.सी.ए.आर पेंशन जोन की यही पूर्वाचाली है

डॉ. हीरालाल चौधरी, की यह कर्मस्थली है

मछली के प्रेरित प्रजनन के डॉ. चौधरी ही जनक पिता है

इस सिफरी का आदर्श कहता, रामायण और गीत है

पूर्व निदेशक डॉ. वी. जी. झींगरण का विशिष्ठ कार्य प्रख्यात हुआ

भारत सरकार की ओर से, पद्मश्री विभूषित प्राप्त हुआ

सिफरी के आज निदेशक पद को, डॉ. बि.के.दास संभाले है

कर्मठता, गुणवत्ता, स्वच्छता, का प्रतीक निराले है

एक संस्थान की छवि क्या होती, उस छवि का वंशी बजा दिए

इस सिफरी के कोने-कोने को, स्वर्ग की भांति सजा दिए

जो सदा सत्य के राह पर चलते, पथ छोड़ देते जो झूठा है

कर गए तारीफ मंत्रीगण उनकी सुकार्य की लड़िया जिन्होंने गुथा है

सिफरी एक अनंत सफर है, जिसका इतिहास अनूठा है।

उमाशंकर

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती समारोह

संस्थान में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती दिनांक 26 सितंबर से 2 अक्टूबर, 2020 तक विभिन्न कार्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला के रूप में मनाया गया। इसके लिए सप्ताह



लिए स्वच्छता पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दिनांक 26 सितंबर, 2020 को स्वच्छ भारत कार्यक्रम के तहत आस-पास के झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले लोगों को मास्क और सैनिटाइजर वितरित किया गया। साथ ही, गंगा घाट की सफाई, घाट पर ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव तथा स्वच्छता के लिए जन-जागरूक कार्यक्रम किया गया। दिनांक 27 और 28 सितम्बर, 2020 को चित्रकारी प्रतियोगिता का आयोजन ऑनलाइन मोड में किया गया था जहाँ स्कूली बच्चों और



संस्थान कर्मियों ने भाग लिया था। 30 सितंबर 2020 को बालासोर के ऋषिया जलाशय में पेन में मछली पालन तकनीक का प्रदर्शन किया जो श्री प्रताप चन्द्र सारंगी, माननीय राज्य मंत्री, पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन और सूक्ष्म, लघु और मध्यम



उद्यम, भारत सरकार, की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। डॉ. वि. के. दास, निदेशक के नेतृत्व में ऋषिया जलाशय में संस्थान द्वारा विकसित एचडीपीई पेन को स्थापित किया गया जिसमें मत्स्य बीजों को उनके मूल स्थल पर संचयित कर पेन पालन तकनीक से अंगुलिका पालन किया जा सके। इस अवसर पर माननीय मंत्री महोदय ने स्वच्छता का महत्व मत्स्य कृषको को समझाया।



मुख्य शोध उपलब्धियां

- तेलंगाना के पलायार जलाशय से मीठे पानी का झींगा (*मैक्रोब्रैचियम* प्रजाति) का उत्पादन वर्ष 2019-20 में 79 टन प्राप्त किया गया जो वर्ष 2016-17 में 64 टन था। इस उत्पादन वृद्धि का कारण झींगा मछली के संचयन द्वारा पालन आधारित मात्स्यिकी है जिसमें भारतीय मुख्य कार्प प्रजातियों के साथ झींगा की दो प्रजातियों, *एम रोजेनबर्गी* और *एम मालकोमसोमी* के बीजों को संचयित किया गया था।
- महानदी में *सिरहिनस रेबा* के लिए गहराई उपयुक्तता वक्र सूचकांक (Depth Suitability Curve Index) पूर्व-मानसून महीनों में सबसे अधिक और मानसून पश्चात 2 मीटर दर्ज किया गया। इसी प्रकार, वेग उपयुक्तता वक्र सूचकांक (Velocity Suitability Curve Index) पूर्व-मानसून महीनों में सबसे अधिक और मानसून पश्चात 1 मीटर दर्ज किया गया।
- ताप्ती नदी से वर्ष 2018 से 2020 के दौरान दर्ज की गई 49 बेंथिक बड़ी अकशेरुकी प्रजातियों में से गैस्ट्रोपॉड की उपलब्धता अधिकतम (60 प्रतिशत) देखी गई, जिसमें सबसे अधिक *बेलम्या बेंगालेंसिस* पाया गया।
- स्तरीकरण ट्रांफिक खाद्य श्रृंखला के कैस्केडिंग पारिस्थितिक क्षेत्रों में प्लवक घनत्व का इको-निश आधारित स्तरीकरण देखा गया है। गांगेय भागों के बाढ़कृत आर्द्रभूमि में सीटू क्षेत्र के परीक्षणों से पता चला कि बंद जल क्षेत्रों के जैव तत्वों से भरी हुई स्थलों में पादप प्लवकों से अधिक पेनेट डायटम और साइनोबैक्टीरिया पाये जाते हैं।
- बायोडीजल उत्पादन में वर्मीकम्पोस्ट खाद निकालने में उपयोगी छोटी शैवालों के पालन से इनका उपयोग में पोषक तत्वों के रूप किया जाता था। वर्मीकम्पोस्ट अर्क और बीजी11 के संयोजन ने *क्लोरेला* प्रजातियों के विकास, जैव भर एकाग्रता और लिपिड उत्पादन में काफी सुधार देखा गया। फैटी एसिड प्रोफाइलिंग स्पष्ट रूप से यह दिखाते हैं कि बायोडीजल की गुणवत्ता एएसटीएम इंटरनेशनल बायोडीजल का एक मानक है।
- टोंस नदी से भूरी ट्राउट *सल्मो टुट्टा* की आणविक पहचान 18S rRNA अनुक्रम और फ्राइलोजेनेटिक ट्री विश्लेषण के माध्यम से की गई थी जिसमें यह अनुमान लगाया कि हमारा अलग जीनबैंक एक्सेस नंबर MN508429 एनसीबीआई जजीनबैंक एक्सेसेशन नंबर FJ710888 (ऑस्ट्रेलिया) से *सल्मो टुट्टा* के करीब है।

- संस्थान की वेबसाइट (<http://cifri.res.in/UR/lis/index.html>) पर सार्वजनिक उपयोग के लिए भारत के 18 राज्यों के अंतर्स्थलीय जल संसाधनों को ई-एटलस में उपलब्ध कराया है।

संस्थान में विश्व डॉल्फिन दिवस का आयोजन

नदीय डॉल्फिन, भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव है। विभिन्न मानवजनित गतिविधियों के कारण इनकी आबादी दिन पर दिन कम होती जा रही है। डॉल्फिन की आबादी नदीय पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य का एक संकेतक है। अंधाधुंध और अवैध मछली पकड़ने के परिणामस्वरूप किशोर मछलियों को पकड़ा जा रहा है और अन्तर्स्थलीय जल से डॉल्फिन की इस अवैध पकड़ के कारण उनकी आबादी कम होती जा रही है।

संस्थान ने दिनांक 5 अक्टूबर 2020 को विश्व डॉल्फिन दिवस मनाया। इस अवसर पर, गंगा नदी के दासपारा घाट और नवाबगंज घाट पर और उसके आस-पास के इलाके में जहाँ



डॉल्फिन आमतौर पर देखी जाती हैं, एक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम कोविड दिशानिर्देश और सामाजिक दूरी को ध्यान में रखते हुए आयोजित किया गया था। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने इस राष्ट्रीय जलीय जीव के महत्व को विस्तार से बताया और यह भी



समझाया कि किस तरह मछुआरों अपनी सक्रिय भागीदारी से इसके संरक्षण में योगदान दे सकते हैं। उन्होंने डॉल्फिन के आवास स्थलों को नुकसान नहीं पहुंचाने की भी सलाह दी। कार्यक्रम के दौरान गंगा नदी में डॉल्फिन देखी गयीं।

महत्वपूर्ण बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने 24 सितंबर, 2020 को प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के अंतर्गत केंद्रीय स्थायी समिति की चौथी बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिक ने दिनांक 01.10.2020 को कृषि वानिकी संगठन (ICRAF), नई दिल्ली और भाकृअनुप-भारतीय बीज विज्ञान संस्थान (ICAR-IISS), भोपाल द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार "मृदा स्पेक्ट्रोस्कोपी : रैपिड मृदा स्वास्थ्य आकलन के लिए एक उभरती हुई तकनीक" में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 2 अक्टूबर 2020 को वैभव शिखर सम्मेलन के उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लिया। इस शिखर सम्मेलन का उद्घाटन माननीय प्रधान मंत्री द्वारा किया गया था।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 5 अक्टूबर, 2020 को वैभव शिखर सम्मेलन 2020 में "सटीक कृषि" के सत्र में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 8 अक्टूबर, 2020 को वर्चुअल मोड पर आईसीएआर क्षेत्रीय समिति II की XXV बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 9 अक्टूबर, 2020 को उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), डॉ. जे. के. जेना की अध्यक्षता में ब्रिटिश सीड कमीशन के साथ "सीड फंडिंग एंड रिसर्च लिंकेज" विषय पर आयोजित बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 14 अक्टूबर, 2020 को भारतीय मानक ब्यूरो, नोएडा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार "सुरक्षा मानकों के साथ पृथ्वी की रक्षा" में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 15 अक्टूबर, 2020 को फिशरीज सेक्टर कोविड 19 रिकवरी प्रोजेक्ट-न्यू वैल्यू चेन और डायवर्सिफिकेशन (अलंकारी मछली पालन, शीत जल मत्स्य पालन, समुद्री शैवाल) के लिए विश्व बैंक तैयारी मिशन' विषय

पर वर्चुअल मोड पर आयोजित स्टेकहोल्डर बैठक में भाग लिया।



- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिक ने दिनांक 15 अक्टूबर, 2020 को तटीय कृषि के प्रबंधन के लिए उन्नत रणनीतियाँ विषय पर आयोजित वेबिनार में भाग लिया। यह वेबिनार कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, नेवटिया यूनिवर्सिटी, पश्चिम बंगाल द्वारा आयोजित किया गया था।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने वैभव सत्र 2020 में "आधुनिक मत्स्य पालन, जलीय कृषि और बीज उत्पादन" में भाग लिया और 16 अक्टूबर, 2020 को अपस्केल अंतर्स्थलीय मछली उत्पादन- वर्तमान आवश्यकताओं और भविष्य की स्थिरता के लिए प्रौद्योगिकियों पर निदेशक ने एक प्रस्तुति दी।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने 16 अक्टूबर, 2020 को विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर खाद्य एवं कृषि संगठन के 75 वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित वर्चुअल वेबिनार में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने 'आत्मनिर्भर कृषि से आत्मनिर्भर भारत' विषय पर वर्चुअल कार्यशाला में भाग लिया। यह कार्यशाला दिनांक 17 अक्टूबर, 2020 को पीएचडी चैम्बर ऑफ कॉमर्स द्वारा कृषि सुधार और मूल्य श्रृंखला विकास पर ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया था।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 19 अक्टूबर, 2020 को भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन की कार्यकारी समिति की वैधानिक ई-बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 19 अक्टूबर, 2020 को एफएसडी के तहत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधिनस्थ संस्थानों के साथ विदेशी सहायता प्रदत्त अंतर्राष्ट्रीय सहयोगी अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिक ने दिनांक 19 अक्टूबर, 2020 को एग्रो एंड फूड टेक 2020 के तहत कोनफेडरेसन ऑफ इंडियन इंडस्ट्रीज़ द्वारा आयोजित "सतत, प्रौद्योगिकी क्षेत्र और विकास के अगले स्तर के जिम्मेदार" नामक एक दिवसीय वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिक ने प्रेस इन्फोर्मेशन ब्यूरो, पटना द्वारा दिनांक 19 सितंबर, 2020 को आयोजित क्षेत्रीय आउटरीच बैठक में आमंत्रित वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. प्रेम कुमार, माननीय कृषि, पशुपालन और मत्स्य मंत्री, बिहार थे।

• संस्थान द्वारा हिमाचल प्रदेश सरकार के मत्स्य विभाग के साथ गोविंद सागर जलाशय, हिमाचल प्रदेश के पारिस्थितिक मूल्यांकन के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया।

गतिविधियां

- संस्थान में दिनांक 24-25 सितंबर, के दौरान आईएसओ 9001: 2015 के तहत गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली (क्यूएमएस) के लिए निगरानी लेखा परीक्षा को वर्चुअल मोड में आयोजित की गई।
- महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती के तहत दिनांक 30 सितंबर 2020 को प्रो. शंकर कुमार आचार्य, कृषि विस्तार विभाग, बिधान चंद्र कृषि विश्व विद्यालय, नदिया, पश्चिम बंगाल द्वारा "कृषि पर गांधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता" विषय पर



मुख्य व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

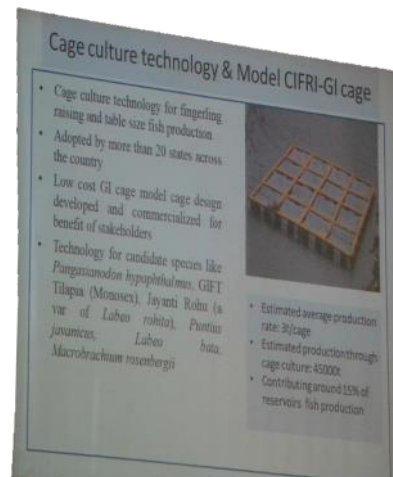
- दिनांक 1 अक्टूबर 2020 को महिला सशक्तिकरण:



गांधीवादी दर्शन के प्रकाश में एक अवलोकन" में एक वेबिनार आयोजित किया गया। इसमें तीन प्रख्यात महिला वक्ताओं ने विभिन्न विषयों पर अपने विद्वतापूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम में 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

- दिनांक 2 अक्टूबर 2020 को "मछुआरों की आजीविका में सुधार करने में गांधीवादी दर्शन" विषय पर हितधारकों के साथ एक वेबिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में भारत

के उत्तरी, पूर्वी, दक्षिणी, पश्चिमी और उत्तर पूर्वी राज्यों के 300 से अधिक मछुआरों ने वर्चुअल मोड के माध्यम से भाग लिया।



- ग्रामीण मछुआरों के लिए 29 सितंबर, 2020 को



विनम्र श्रद्धांजलि

सितंबर-अक्टूबर 2020 के दौरान संस्थान के 2 कर्मियों के स्वर्गवास की सूचना प्राप्त हुई जिनके संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है।

डा. बंकिम चन्द्र झा, अवकाशप्राप्त प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभागाध्यक्ष



संस्थान के पूर्व प्रभागाध्यक्ष, जलाशय एवं बाढकृत मात्स्यिकी प्रभाग, डा. बंकिम चन्द्र झा का निधन दिनांक 4 अक्टूबर, 2020 को उनके कोलकाता निवास स्थल पर हुआ।

डा. झा का जन्म, 1952 में झारखंड (तब : बिहार) के छ्वास नाम के गाँव में हुआ था। उन्होंने एमएससी की पढ़ाई के बाद सिफरी में एक अनुसंधान सहायक के तौर पर कार्यरिंभ किया था। अपने पूरे कार्यकाल में उन्होंने ने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया था - उन्होंने ने लगातार 20 वर्षों तक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की क्षेत्रीय समिति बैठक, जोन-II के समन्वयक, तौर पर कार्य किया। इसके अलावा उन्होंने परिषद के संस्थानों में प्रभागाध्यक्ष के तौर पर अपनी सेवाएँ दी है- प्रभागाध्यक्ष, जलाशय एवं बाढक्षेत्र मात्स्यिकी, प्रभागाध्यक्ष, बाढकृत आर्द्रक्षेत्र प्रभाग आदि। एक शैवालविज्ञानी के तौर पर उन्होंने

देश के कई परितंत्रों, जैसे चिलिका, पुलिकट, केरल के बैकवाटर्स, नदीय क्षेत्र और जलाशयों का गहन अध्ययन किया था। दक्षिण-पूर्व एशिया के अंतर्स्थलीय खुला जलतंत्रों के प्लवक विज्ञान पर उनका फोकस बहुत ही विस्तृत था। सिफरी से अवकाश प्राप्ति के बाद उन्होंने राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद को पिंजरे में मछली पालन तकनीक के प्रसार हेतु सलाहकार के तौर पर अपनी सेवाएँ प्रदान की। सिफरी से अवकाश प्राप्ति के पश्चात भी वे सक्रिय तौर पर संस्थान के बाह्य प्रायोजित अनुसंधान परियोजनाओं से सदैव जुड़े रहें - एक परामर्शक के तौर पर, चाहे वो तीस्ता नदी में फिशपास परियोजना हो, या फिर अंतर्राष्ट्रीय जीआईजेड (जर्मनी के साथ)।

स्वर्गीय डा. झा का कार्यक्षेत्र इतना अधिक विस्तृत था कि प्रस्तुत शोक संदेश में उनकी उपलब्धियों और अन्य सभी पहलुओं को समाहित करना प्रायः असंभव है। उनके अधीन लगभग 10 शोधकर्ताओं ने अपना पीएचडी सम्पन्न किया। आगे भाषा पर पकड़ कि बात कि जाय तो अंग्रेजी और हिन्दी, दोनों ही भाषाओं पर उनकी अच्छी पकड़ थी और एक वक्ता के तौर पर उनका अंदाज बिलकुल अलग था। उनका वक्तव्य सूचनापरक जैसा न होकर एक पारस्परिक संवाद जैसा लगता था जिसे श्रोतागण भी बहुत पसंद करते थे।

डा. झा जैसे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न अनुसंधानकर्ता का निधन संस्थान के लिए एक बहुत बड़ी क्षति है। संस्थान उनके देहावसान पर अपनी संवेदनाएँ प्रकट करता है।

श्री रमन लाल बाल्मीकी, तकनीकी अधिकारी

श्री रमन लाल बाल्मीकी, तकनीकी अधिकारी संस्थान के ड्रायवर (वाहन चालक) का निधन 3 सितंबर, 2020 को कोलकाता में हुआ।

श्री रमन लाल बाल्मीकी का जन्म 15 अगस्त, 1947 को हुआ था। संस्थान में उनकी नियुक्ति ड्रायवर (टी-1) के तौर पर दिनांक 1 जून, 1974 को हुई थी। तत्पश्चात उनकी पदोन्नति नियमित तौर पर हुई और दिनांक 31 अगस्त, 2007 को वे तकनीकी अधिकारी के तौर पर संस्थान से सेवानिवृत्त हुए। संस्थान उनके स्वर्गवास पर अपनी संवेदनाएँ प्रकट करता है।



"अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर युवाओं का ज्ञान संवर्द्धन : आत्मनिर्भर भारत की ओर" पर एक दिवसीय वर्चुअल मोड पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस क्षमता निर्माण कार्यक्रम में 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सम्पादक मण्डल

सम्पादक मण्डल की ओर से आप समस्त पाठकों को सिफरी मासिक समाचार के तीन वर्ष पूरे होने पर हार्दिक बधाई। आप के सामने चतुर्थ वर्ष का द्वितीय अंक (नवम्बर, 2020) प्रस्तुत है। आप सभी के बहुमूल्य सुझाव के लिए हार्दिक

धन्यवाद। आशा है आगे भी आप सभी का सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा। सम्पादक मण्डल के तरफ से सभी पाठकगण को आने वाले त्योहारों की हार्दिक बधाई और ढेरों शुभकामनाएँ!

सम्पादक मण्डल, डा. बंकिम चन्द्र झा एवं श्री रमन लाल बाल्मीकी, देहावसान पर अपनी संवेदनाएँ प्रकट करता है।

आप सभी को संपादक मण्डल की तरफ से धन्यवाद !

समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में संस्थान



Ornamental Fish Culture Unit established by @CIFRI_ICAR at Ramakrishna Sevashram, Bhadrak was inaugurated on 24 Oct. for SC Women to earn alternate income. During training programme, they were provided 25 fish holding tanks of 350 L capacity. #Aatmanirbharkrishi #AatmaNirbharBharat



Narendra Singh Tomar and 9 others
Tweet by ICAR twitter handle

Timeon News
19 October at 15:53

अनुद्देशीय मत्स्य गवेषणा केन्द्र ब्यारकपुरे पक्ष थेके सुन्दरबनेर मत्स्य चाषीदेर जन्य बाड़िये देओया हच्चे साहाय्ये हत

For every news update of your city Download publiC APP

बर्तमान

२५० मत्स्यजीवी परिवारेर पाशे केन्द्रीय संस्था सिफरि

निज्म प्रतिनिधि, बाराकपुरः दुर्गापुजेर शुरुते सुन्दरबनेर प्राञ्चिक एलाकार गरिब मत्स्यजीवीदेर पाशे दाँडाल भारत सरकारे केन्द्रीय अनुद्देशीय मत्स्य गवेषणा संस्था (सिफरि)। बाराकपुरे एइ संस्था गवेषक-विज्ञानीरा सुन्दरबनेर सागर एलाकार प्राय २५०टि मत्स्यजीवी परिवारेर हाते चाषे जन्य माछे चारा, माछे खाद्य, चुन तुले देन। संस्था बाराकपुरे अधिकर्ता डः वसन्तकुमार दास बलेन, माछ चाषे आरु उँसाह बृद्धि एमन परिकल्पना नेओया हयेछि। मत्स्यजीवीदेर जीवन-जीविकार उन्नतिर जन्य सठिक प्रशिक्षणे व्यवस्था करी हच्चे। उँम-पुन परवर्ती समये सिफरि एकाधिकबार मत्स्यजीवी परिवारुलि पाशे दाँडियेछे।



ब्यारकपुर १: अनुद्देशीय मत्स्य गवेषणा केन्द्र ब्यारकपुरे पक्ष

(Ministry of Agriculture and Farmers Welfare)

Main menu

Post-Amphan support for Sustainable Fisheries Development of SC Fishers of Sagar Island, West Bengal

20th October, 2020, Barrackpore

In the midst of COVID-19 Pandemic situation, the ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute, Barrackpore, Kolkata in collaboration with local NGO, SKSVYCS distributed 9,000 Kgs of fish feed, 5,000 Kgs of lime and 800 Kgs of fish seed to the 250 SC beneficiaries of Sagar Island today.

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत
दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई-मेल: director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट: www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मासिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः उत्पन्न नहीं की जा सकती है